L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- II
PAPER IV
Psychology (Honours)
TOPIC :- फ्रायड की क्रिया का वर्णन करें

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assit- professor
Guest- Teacher
V.S.J. College RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar.dbg2013@gmail.com

Q. फ्रायड एवं एरिक्सन के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन।

सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) एवं एरिक एरिक्सन (Erik Erikson) दोनों ही मनोविश्लेषक (Psychoanalyst) हैं। जिन्होंने अलग-अलग व्यक्तित्व के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। दोनों के सिद्धान्त में कुछ समानताएँ एवं कुछ विभिन्नताएँ हैं। इन दोनों के सिद्धान्तों में प्रमुख समानताएं हैं।

(i) फ्रायड ने व्यक्तित्व के सिद्धान्तों में पाँच महत्वपूर्ण अवस्थाओं जैसे- मुखावस्था (oral stage) गुदावस्था (anal stage) आदि का वर्णन किया है। ठीक उसी तरह से एरिक्सन ने भी व्यक्तित्व के सिद्धान्त में आठ महत्वपूर्ण अवस्थाओं जैसे शैशवावस्था (infancy), प्रारम्भिक बाल्यावस्था (early childhood) आदि का वर्णन किया है। ये दोनों ही वैज्ञानिक व्यक्तित्व विकास (personality development) के इन अवस्थाओं को पूर्वनिश्चित एवं अपरिवर्तनीय (invariant) मानते हैं। उनके क्रम में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है, ऐसा मानते हैं।

(ii) फ्रायड के समान एरिक्सन ने भी अपने व्यक्तित्व के सिद्धान्त में जैविक (biological) एवं यौनिक (sexual) कारकों को महत्व दिया है।

(iii) एरिक्सन ने फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धान्त (personality theory) के संरचनात्मक मॉडल (structural model) अर्थात उपाहं (id) अहं (ego) तथा पराहं (super ego) को स्वीकार किया, हालांकि यह बात जरूर है कि उन्होंने व्यक्तित्व की व्याख्या में अहं (ego) पर तुलनात्मक रूप से अधिक बल दिया है।

इन समानताओं के बावजूद इन दोनों सिद्धान्तों में कुछ महत्वपूर्ण अन्तर हैं। जो निम्नलिखित हैं।

(i) मैडी (Maddi 1956) का मत है। फ्रायड ने अपने व्यक्तित्व सिद्धान्त में उपाहं (id) अहं (ego) तथा पराहं (super ego) को महत्वपूर्ण माना है। जबकि एरिक्सन ने अपने व्यक्तित्व

Scanned with CamScanner

सिद्धान्त में अहं (Ego) को सर्वोपरि माना है। दूसरे शब्दों में, फ्रायड के अनुसार मानव व्यवहार का आधार इदम्, अहं एवं पराहं तीनों ही होता है। जबकि एरिक्सन के अनुसार मानव व्यवहार का आधार सिर्फ अहं (Ego) होता है। वे अहं को व्यक्तित्व की एक स्वतंत्र संरचना मानते हैं। जो एक ऐसा सामाजिक-अनुकूली विकास (Social-adaptive development) का अनुसरण करता है जिसे इदम् (Id) एवं अन्य मूलप्रवृत्तियों से विकास के अनुरूप कहा जा सकता है। फ्रायड अहं को व्यक्तित्व का एक कार्यकारिणी पहलू मानते हैं जो इदम् एवं वास्तविकता (reality) के बीच संतुलन बनाये रखता है।

(ii) फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धान्त में मानव को एक अविवेकी प्रकृति का जीव मानकर उसके व्यवहारों की व्याख्या की गयी है। जबकि एरिक्सन के व्यक्तित्व सिद्धान्त में मानव को एक विवेकी एवं तार्किक (Logical) प्रकृति का जीव मानकर उसके व्यवहारों की व्याख्या की गयी है।

(iii) फ्रायड ने अपने व्यक्तित्व के सिद्धान्त में व्यक्तित्व के विकास के लिए माता-पिता के प्रभावों को सर्वोपरि माना है। जबकि एरिक्सन ने व्यक्तित्व विकास में बच्चों का माता-पिता के साथ सम्बन्ध के अलावा उस पूरे ऐतिहासिक परिवेश को महत्वपूर्ण माना है। जिसमें परिवार अवस्थित (Located) होता है। दूसरे शब्दों में एरिक्सन ने उस पूरे मनोऐतिहासिक परिस्थिति को व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण माना है। जिसमें परिवार अवस्थित होता है। दूसरे शब्दों में एरिक्सन ने उस पूरे मनोऐतिहासिक परिस्थिति को व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण माना है जिसमें अहं (Ego) एक खास तरह से परिवर्तित एवं विकसित होता है।

(iv) एरिक्सन के व्यक्तित्व सिद्धान्त में शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक अर्थात् पूर्ण जीवन अवधि (Life span) को ध्यान में रखकर व्यक्तित्व विकास की व्याख्या की गयी है जबकि फ्रायड (Freud) ने व्यक्तिगत विकास में मूलतः प्रारंभिक बाल्यावस्थाओं में की गयी अनुभूतियों को ही महत्वपूर्ण माना है और जनेन्द्रियावस्था के बाद वाली वयस्कावस्था के बाद की अनुभूतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया है।

Scanned with CamScanner

(v) फ्रायड तथा एरिक्सन के सिद्धान्तों में एक विन्दु पर यह अन्तर है कि मनोवैज्ञानिक संघर्ष का स्वरूप क्या होता है। फ्रायड ने अपने सिद्धान्त में अतीत के अस्तित्व को दिखलाने का प्रयास किया है और इस बात पर बल डाला है कि प्रारंभिक मानसिक आघात या सदमा लगने से अर्थात् बचपनावस्था में किसी तरह की मानसिक सदमा लगने से वयस्कावस्था में असामान्यता (abnormality) उत्पन्न हो जाती है। इसके विपरीत एरिक्सन ने प्रत्येक मनोसामाजिक अवस्था में विकसित होने वाले संक्रान्ति (crisis) को धनात्मक अहं गुण तथा ऋणात्मक की उत्पत्ति का कारण बतलाया है।

(vi) फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धान्त की तुलना में एरिक्सन के व्यक्तित्व सिद्धान्त की शोध मूल्य अधिक है। क्योंकि एरिक्सन के सिद्धान्त के अधिकतर संप्रत्ययों पर आधुनिक व्यवहारपरक एवं सामाजिक वैज्ञानिक कार्य अपनी शोध जारी रखे हुए हैं।

(vii) फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धान्त में केवल जैविक एवं लैंगिक आवेगों पर अधिक बल डाला है। परन्तु एरिक्सन के सिद्धान्त में एक जैविक एवं लैंगिक इच्छाओं के अलावा व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर भी बल डालते एवं व्यक्तित्व विकास की व्याख्या की गयी है।

(i) फ्रायड की सिद्धान्त प्रकृति मनोविश्लेषणात्मक ढंग में विकसित हुआ है। इसमें मानव व्यवहार की व्याख्या करने के लिए मनोविश्लेषणात्मक उपागम को मुख्य आधार बनाया गया है।

(ii) फ्रायड ने अपने सिद्धान्त में मानव व्यवहार को समझने में अचेतन की भूमिका को काफी महत्वपूर्ण बतलाया है। क्योंकि इनके अनुसार व्यक्ति का अधिकांश व्यवहार इसी अचेतन से निर्धारित एवं नियंत्रित होता है। कि फ्रायड ने अपने सिद्धान्त में अचेतन के महत्व को अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ा दिया है। इसका मत है कि एक सामान्य एवं परिपक्व वयस्क के व्यक्तित्व में अचेतन की भूमिका इतनी अधिक

Scanned with CamScan

महत्वपूर्ण नहीं होती है क्योंकि ऐसी नायक अथवा अभिप्रेरकों से अधिक प्रभावित होता है तथा उसकी नायिका ऐसे अभिप्रेरकों से तुलनात्मक रूप से अधिक नियंत्रित होता है।

(iii) फ्रायड ने अपने सिद्धांत में गत अनुभवों की अनुभूतियों, मानसिक ग्रंथियों एवं उनके प्रभावों के लिए स्वप्नों तथा त्रुटियों आदि का भी सहारा लिया है।

(iv) जुंग ने अपने सिद्धांत में अचेतन प्रक्रियाएँ एवं मानसिक रूप से अशुद्ध व्यक्तियों के अध्ययन पर जोर दिया है। और कहा है कि इन व्यक्तियों से मिले तथ्यों के आधार पर सभी तरह के व्यक्तियों की अर्थात् सामान्य एवं असामान्य दोनों तरह के व्यक्तियों की व्याख्या की जा सकती है।

(v) फ्रायड के लिए व्यक्तित्व की संरचना की व्याख्या महत्वपूर्ण है। एडलर ने मानव व्यवहार के समझने की एक अलग व्याख्या महत्वपूर्ण सी मानी है।

(vi) फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धांत में मानव प्रकृति की आवश्यकता एवं अचेतन के प्रभावों से जुड़ा हुआ समझा गया है।

फ्रायड के व्यक्तित्व के सिद्धांतों में कई विभिन्नताएँ हैं पर विभिन्नताओं के बावजूद इन दोनों सिद्धांतों में कुछ महत्वपूर्ण समानता है और वह यह है कि फ्रायड तथा एडलर दोनों ने ही व्यक्तियों के व्यवहार के प्रति एक गत्यात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है। दोनों ने व्यक्तित्व की संरचना एवं गतिकी समझाने के लिए कुछ ही व्यक्तियों के गहन अध्ययन को महत्वपूर्ण माना है। इस तरह से स्पष्ट हुआ कि एडलर का व्यक्तित्व सिद्धांत फ्रायड के व्यक्तित्व सिद्धांत से अलग होते हुए भी मौलिक रूप से भिन्न है। स्वाभाविक फ्रायड एवं एडलर दोनों ही मनोविश्लेषक (Psychoanalyst) हैं। दोनों के सिद्धांतों में कुछ असमानताएँ एवं कुछ विभिन्नताएँ हैं। पर दोनों के सिद्धांतों में महत्वपूर्ण समानताएँ भी हैं।

Dr. Poonam Kumari Sahu,
V.S.J. College, Rajnagar.
Date-28/04/2020,